

下冊

主編：馬振岐 劉思遠

# 中華成語典故故事

ZHONG HUA CHENG YU DIAN GU GU SHI



延邊人民出版社

# 中华成语典故故事

(下)

|     |     |     |
|-----|-----|-----|
| 主 编 | 马振岐 | 刘思远 |
| 副主编 | 赵鹏飞 | 于 元 |
|     | 孙 明 |     |

[吉]新登字 08 号

责任编辑:曲月胜

封面设计:张贵征

插图:何 武

中华成语典故故事(上、下)

主编:马振岐 刘思远

延边人民出版社出版

长春市长空印刷厂印刷 吉林省新华书店发行

850×1168毫米 32开本 24印张 98插图 485千字

1997年5月第1版 2003年9月第2版第1次印刷

ISBN 7-80599-634-2/1·195

定价(全两册)46.00元

# 目 录

|             |    |           |    |
|-------------|----|-----------|----|
| A           |    | 抱残守缺····· | 38 |
|             |    | 抱薪救火····· | 40 |
| 爱鹤失众·····   | 1  | 暴虎冯河····· | 42 |
| 安步当车·····   | 4  | 杯弓蛇影····· | 44 |
| 安如泰山·····   | 6  | 背水一战····· | 46 |
| 安居乐业·····   | 8  | 逼上梁山····· | 48 |
| 安然无恙·····   | 10 | 筚路蓝缕····· | 50 |
| 按兵不动·····   | 12 | 髀肉复生····· | 52 |
| 按图索骥·····   | 14 | 鞭长莫及····· | 54 |
| 暗渡陈仓·····   | 16 | 标新立异····· | 57 |
| B           |    | 别无长物····· | 59 |
|             |    | 兵不厌诈····· | 61 |
| 八面威风·····   | 18 | 兵贵神速····· | 63 |
| 白云苍狗·····   | 20 | 冰山难靠····· | 65 |
| 白驹过隙·····   | 22 | 病入膏肓····· | 67 |
| 百折不挠·····   | 24 | 卜昼卜夜····· | 69 |
| 百发百中·····   | 26 | 不合时宜····· | 71 |
| 百闻不如一见····· | 28 | 不教而诛····· | 73 |
| 班门弄斧·····   | 30 | 不耻下问····· | 75 |
| 半途而废·····   | 32 | 不拘小节····· | 77 |
| 半面之交·····   | 34 | 不名一钱····· | 80 |
| 包藏祸心·····   | 36 | 不翼而飞····· | 82 |

|                |     |                |     |
|----------------|-----|----------------|-----|
| 不欺暗室·····      | 84  | 超群绝伦·····      | 134 |
| 不逞之徒·····      | 86  | 车水马龙·····      | 136 |
| 不辨菽麦·····      | 88  | 车载斗量·····      | 138 |
| 不寒而栗·····      | 90  | 乘胜逐北·····      | 140 |
| 不识时务·····      | 92  | 乘风破浪·····      | 142 |
| 不知所措·····      | 94  | 城狐社鼠·····      | 144 |
| 不知所云·····      | 96  | 城门失火,殃及池鱼····· | 146 |
| 不修边幅·····      | 98  | 程门立雪·····      | 148 |
| 不遗余力·····      | 100 | 惩前毖后·····      | 150 |
| 不学无术·····      | 102 | 城下之盟·····      | 152 |
| 不可同日而语·····    | 104 | 乘虚而入·····      | 154 |
| 不入虎穴,焉得虎子····· | 106 | 惩一儆百·····      | 156 |

## C

|           |     |              |     |
|-----------|-----|--------------|-----|
| 才高八斗····· | 108 | 痴人说梦·····    | 158 |
| 才兼文武····· | 109 | 叱咤风云·····    | 160 |
| 沧海一粟····· | 112 | 赤膊上阵·····    | 162 |
| 沧海遗珠····· | 114 | 冲锋陷阵·····    | 165 |
| 藏垢纳污····· | 116 | 重蹈覆辙·····    | 167 |
| 草菅人命····· | 118 | 宠辱不惊·····    | 169 |
| 侧目而视····· | 120 | 初出茅庐·····    | 171 |
| 差强人意····· | 122 | 出尔反尔·····    | 173 |
| 察言观色····· | 124 | 出类拔萃·····    | 176 |
| 豺狼当道····· | 126 | 出奇制胜·····    | 178 |
| 蟾宫折桂····· | 128 | 出人头地·····    | 180 |
| 长袖善舞····· | 130 | 初生之犊不畏虎····· | 182 |
| 唱筹量沙····· | 132 | 出言不逊·····    | 184 |
|           |     | 杵臼之交·····    | 186 |
|           |     | 唇亡齿寒·····    | 188 |

|               |     |
|---------------|-----|
| 此地无银三百两 ..... | 191 |
| 从善如流 .....    | 193 |
| 从天而降 .....    | 195 |
| 摧枯拉朽 .....    | 197 |

## D

|            |     |
|------------|-----|
| 打草惊蛇 ..... | 199 |
| 大腹便便 ..... | 201 |
| 大逆不道 ..... | 203 |
| 大器晚成 ..... | 205 |
| 大声疾呼 ..... | 207 |
| 大义灭亲 ..... | 209 |
| 大喜过望 ..... | 211 |
| 呆若木鸡 ..... | 213 |
| 待价而沽 ..... | 215 |
| 胆大如斗 ..... | 217 |
| 当务之急 ..... | 218 |
| 倒屣相迎 ..... | 219 |
| 道听途说 ..... | 221 |
| 倒行逆施 ..... | 223 |
| 得过且过 ..... | 225 |
| 得陇望蜀 ..... | 227 |
| 得心应手 ..... | 229 |
| 得意忘形 ..... | 231 |
| 地利人和 ..... | 233 |
| 点石成金 ..... | 235 |
| 东山再起 ..... | 236 |

|            |     |
|------------|-----|
| 东食西宿 ..... | 238 |
| 东施效颦 ..... | 240 |
| 独当一面 ..... | 242 |
| 断鹤续鳧 ..... | 244 |
| 断头将军 ..... | 245 |
| 对牛弹琴 ..... | 247 |
| 顿开茅塞 ..... | 248 |
| 咄咄怪事 ..... | 249 |

## E

|             |     |
|-------------|-----|
| 二桃杀三士 ..... | 250 |
| 尔虞我诈 .....  | 252 |

## F

|                 |     |
|-----------------|-----|
| 发指眦裂 .....      | 254 |
| 返老还童 .....      | 256 |
| 方寸之地 .....      | 258 |
| 方枘圆凿 .....      | 260 |
| 防微杜渐 .....      | 262 |
| 防民之口,甚于防川 ..... | 264 |
| 飞蛾赴火 .....      | 266 |
| 飞黄腾达 .....      | 269 |
| 飞将数奇 .....      | 271 |
| 飞短流长 .....      | 273 |
| 非驴非马 .....      | 275 |
| 分崩离析 .....      | 277 |
| 分道扬镳 .....      | 279 |

|              |     |
|--------------|-----|
| 焚书坑儒 .....   | 281 |
| 风吹草动 .....   | 283 |
| 风声鹤唳 .....   | 285 |
| 风马牛不相及 ..... | 287 |
| 奉公守法 .....   | 289 |
| 釜底游鱼 .....   | 291 |
| 付之一炬 .....   | 294 |
| 负荆请罪 .....   | 296 |
| 负隅顽抗 .....   | 299 |
| 负重致远 .....   | 301 |
| 腹心之疾 .....   | 303 |
| 覆水难收 .....   | 305 |
| 赴汤蹈火 .....   | 307 |

## G

|            |     |
|------------|-----|
| 改过自新 ..... | 309 |
| 甘棠遗爱 ..... | 311 |
| 肝脑涂地 ..... | 313 |
| 刚愎自用 ..... | 315 |
| 高山流水 ..... | 317 |
| 高朋满座 ..... | 319 |
| 高枕无忧 ..... | 321 |
| 高屋建瓴 ..... | 324 |
| 高阳酒徒 ..... | 326 |
| 割席分坐 ..... | 328 |
| 各如其意 ..... | 330 |
| 各得其所 ..... | 332 |

|              |     |
|--------------|-----|
| 各自为政 .....   | 334 |
| 耕前锄后 .....   | 336 |
| 绠短汲深 .....   | 338 |
| 更上一层楼 .....  | 340 |
| 功亏一篑 .....   | 342 |
| 功败垂成 .....   | 344 |
| 觥筹交错 .....   | 346 |
| 钩心斗角 .....   | 348 |
| 狗尾续貂 .....   | 350 |
| 狗恶酒酸 .....   | 352 |
| 苟延残喘 .....   | 354 |
| 姑妄言之 .....   | 356 |
| 鼓盆之戚 .....   | 358 |
| 固若金汤 .....   | 360 |
| 顾名思义 .....   | 362 |
| 瓜田李下 .....   | 364 |
| 挂羊头卖狗肉 ..... | 366 |
| 管窥蠡测 .....   | 368 |
| 管中窥豹 .....   | 370 |
| 归马放牛 .....   | 372 |
| 国土无双 .....   | 374 |
| 裹足不前 .....   | 376 |
| 过门不入 .....   | 378 |
| 过犹不及 .....   | 380 |

## H

|            |     |
|------------|-----|
| 骇人听闻 ..... | 382 |
|------------|-----|



|                 |     |               |     |
|-----------------|-----|---------------|-----|
| 驥服盐车 .....      | 488 | 竭泽而渔 .....    | 534 |
| 家喻户晓 .....      | 490 | 解弦更张 .....    | 536 |
| 家徒四壁 .....      | 491 | 解衣推食 .....    | 538 |
| 假仁纵敌 .....      | 493 | 金屋藏娇 .....    | 540 |
| 嫁祸于人 .....      | 495 | 金石为开 .....    | 542 |
| 价值连城 .....      | 496 | 金迷纸醉 .....    | 543 |
| 坚甲利兵 .....      | 498 | 金龟换酒 .....    | 545 |
| 兼听则明 偏信则暗 ..... | 500 | 金瓯无缺 .....    | 547 |
| 见卵求鸡 .....      | 502 | 巾幗英雄 .....    | 549 |
| 见利忘义 .....      | 503 | 锦字回文 .....    | 551 |
| 见危受命 .....      | 505 | 锦屏射雀 .....    | 553 |
| 见猎心喜 .....      | 507 | 尽善尽美 .....    | 555 |
| 箭在弦上 .....      | 509 | 尽锐出战 .....    | 557 |
| 江郎才尽 .....      | 511 | 尽忠报国 .....    | 560 |
| 胶柱鼓瑟 .....      | 512 | 近水楼台先得月 ..... | 562 |
| 蛟龙得水 .....      | 514 | 近悦远来 .....    | 564 |
| 交头接耳 .....      | 516 | 噤若寒蝉 .....    | 565 |
| 骄奢淫逸 .....      | 518 | 惊弓之鸟 .....    | 567 |
| 蕉鹿之梦 .....      | 519 | 精卫填海 .....    | 569 |
| 矫枉过正 .....      | 520 | 井底之蛙 .....    | 571 |
| 脚踏实地 .....      | 522 | 九死一生 .....    | 573 |
| 揭竿而起 .....      | 524 | 九牛一毛 .....    | 575 |
| 嗟来之食 .....      | 526 | 酒池肉林 .....    | 577 |
| 节外生枝 .....      | 527 | 居心叵测 .....    | 579 |
| 结草衔环 .....      | 529 | 居安思危 .....    | 580 |
| 结驷连骑 .....      | 531 | 鞠躬尽瘁 .....    | 582 |
| 捷足先登 .....      | 532 | 橘化为枳 .....    | 584 |

|            |     |
|------------|-----|
| 举案齐眉 ..... | 586 |
| 举措失当 ..... | 588 |
| 举一反三 ..... | 590 |
| 举足轻重 ..... | 591 |
| 卷土重来 ..... | 593 |

## K

|            |     |
|------------|-----|
| 开天辟地 ..... | 595 |
| 开门揖盗 ..... | 597 |
| 开卷有益 ..... | 599 |
| 刻舟求剑 ..... | 600 |
| 口蜜腹剑 ..... | 602 |
| 口血未干 ..... | 604 |
| 扣盘扞烛 ..... | 606 |
| 夸父追日 ..... | 608 |
| 脍炙人口 ..... | 611 |
| 宽猛相济 ..... | 613 |
| 狂奴故态 ..... | 615 |
| 旷日持久 ..... | 617 |
| 困兽犹斗 ..... | 619 |

## L

|            |     |
|------------|-----|
| 蓝田生玉 ..... | 621 |
| 滥竽充数 ..... | 623 |
| 狼子野心 ..... | 625 |
| 狼狈不堪 ..... | 627 |
| 老马识途 ..... | 629 |

|            |     |
|------------|-----|
| 乐极生悲 ..... | 632 |
| 乐不可支 ..... | 634 |
| 乐此不疲 ..... | 636 |
| 乐不思蜀 ..... | 638 |
| 立锥之地 ..... | 640 |
| 利令智昏 ..... | 642 |
| 梁上君子 ..... | 644 |
| 量体裁衣 ..... | 646 |
| 寥若晨星 ..... | 647 |
| 辽东白豕 ..... | 648 |
| 临渴掘井 ..... | 650 |
| 临危不惧 ..... | 652 |
| 龙泉太阿 ..... | 653 |
| 龙山落帽 ..... | 655 |
| 龙蛇飞动 ..... | 657 |
| 龙阳泣鱼 ..... | 659 |
| 鹿死谁手 ..... | 661 |
| 绿衣使者 ..... | 662 |
| 绿珠坠楼 ..... | 664 |
| 论功行赏 ..... | 666 |
| 罗雀掘鼠 ..... | 668 |
| 络绎不绝 ..... | 671 |
| 洛阳纸贵 ..... | 673 |

## M

|            |     |
|------------|-----|
| 马革裹尸 ..... | 675 |
| 马首是瞻 ..... | 677 |



# 韩信将兵，多多益善

hán xìn jiàng bīng, duō duō yì shàn

韩信统帅兵马，越多越好。

韩信是汉高祖刘邦的大将，和萧何、张良，称为“汉兴三杰”。可是，刘邦对于韩信从他自称齐王时就已开始不信任，韩信对刘邦也不满。

刘邦称帝后，有人密告说韩信阴谋反叛，准备逮捕他。刘邦采用陈平的计策，假称游览云梦（沼泽名，楚之名胜，在今湖北境内），在韩信到陈地朝见他时，将韩信逮捕，解进京去。回到洛阳以后，刘邦宣布大赦，韩信被削去齐王封号，改封“淮阴侯”。

后来，刘邦与韩信的关系，稍有缓和。有一次，在宴席上，刘邦曾问韩信：“依你看来，象我这样的人能带多少人马？”韩信答道：“陛下可以带领十万兵马。”刘邦又问：“那么你呢？”韩信不客气地说：“臣多多而益善耳（我是越多越好）！”刘邦于是笑道：“你既然如此善于带兵，怎么被我逮住了呢？”韩信沉吟半晌才说：“你虽然带兵的能力不如我，可是您有管将的能力啊。”

**注释：**语出《史记·淮阴侯列传》：“上问曰：‘如我能将几何？’

信曰：‘陛下不过能将十万。’上笑曰：‘于君何如？’曰：

‘臣多多而益善耳。’上笑曰：‘多多益善，何为（wèi）我禽（擒）？’信曰：‘陛下不能将兵，而善将将，此乃信之所以为陛下禽也’。”（能将几何：能带多少兵？而善将将：但是善于统率将领。）将：统率。益：更加。

**用法：**褒义。又可用作“韩信将兵”或“多多益善”。古代是用来对韩信统帅兵马才干的赞誉。现代多用来形容数量越多越好。

**例句：**只要合乎条件，合乎章程、决议，是自愿的，有坚强的领导骨干（主要有两条：公道、能干），办得好，那是～。

**反义：**宁缺毋滥

# 汗流浹背

hàn liú jiā bèi

出汗很多，湿透了背上的衣服。

西汉时期的孝文皇帝勤于政事，对国家大事从不含糊，有时对一些具体问题，也常常过问。

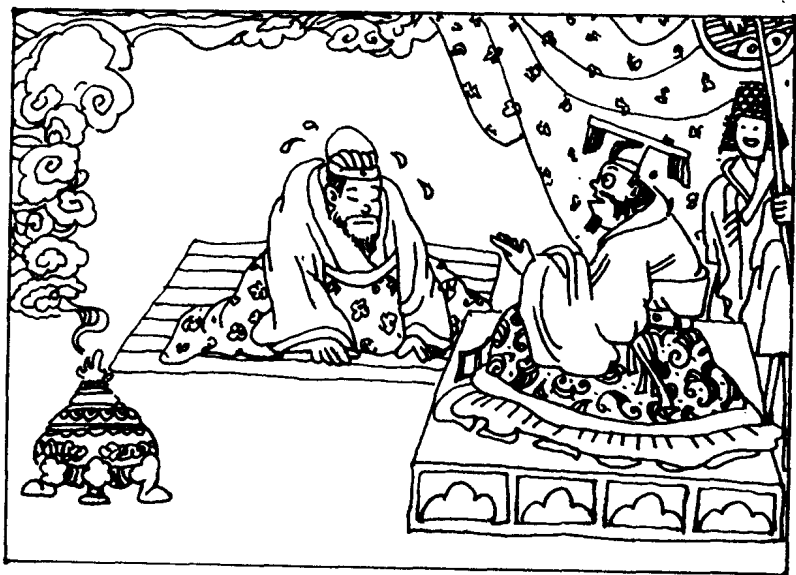
一天早朝，孝文帝询问右丞相周勃：“我们国家一年判决的案件有多少件？”

周勃就向皇上谢罪说道：“不知道。”

皇上又问道：“国家一年到头钱财、粮食收入到府库中的数目是多少呢？”

周勃又向皇上谢罪说不知道。当时他不敢面对孝文皇帝，吓得全身都出了汗，顺着脊背向下流，满面羞愧之色。左相陈平为人机智，站出来回答说：“陛下，这些具体事情，有分管的官员管，丞相只管国家总体大事。”为周勃解了围。

**注释：**语出汉·司马迁《史记·陈丞相世家》：“孝文皇帝既益明习国家事，朝而问右丞相勃曰：‘天下一岁决狱几何？’勃谢曰：‘不知。’问：‘天下一岁钱谷出入几何？’勃又谢不知。汗出浹背，愧不能对。”成语“汗流浹背”就是由这个故事演化而来。浹：湿透。形容因惭愧、恐惧而窘急得出



汗。

用法：“汗流浹背”，原形容极度惶恐或惭愧的样子，现常用来形容天气过热或人在极度紧张剧烈的劳动中满身大汗。

例句：看得他身上冷一阵，热一阵，冷时便浑身发抖，热时便～，不住的面红耳赤，意往神驰，身上不知怎样才好。（吴沃尧《二十年目睹之怪现状》）

近义：汗如雨下 汗出如浆 汗颜无地 挥汗如雨

反义：镇定自若 神色不动

# 汗马功劳

hàn mǎ gōng láo

在战争中立下重大功劳。

萧何是汉高祖刘邦的同乡，刘邦起兵反秦，萧何始终帮他筹谋划策，忠心耿耿，是刘邦最可靠的助手。秦亡以后，刘邦打败了项羽，建立汉朝，做了皇帝，任萧何为丞相。刘邦认为论功劳应以萧何为第一，所以首先封他为“酈侯”（酈，县名，今湖北光化县），食邑八千户。但是不少功臣都不服。有人说：“我们拚死拼活，多的经过百余战，少的也打过几十仗，而萧何未有汗马之劳，只会耍笔杆、发议论，根本没上过战场，其封赏反在我们之上，这是什么道理？”

刘邦问道：“你们知道打猎的事吗？”

大家同声回答：“知道。”

刘邦于是接着说：“打猎的时候，追杀野兽的是狗，而指明野兽的住处，去向，让狗去追杀的，却是人。你们，只会追杀，不过是‘功狗’而已，至于萧何，他专门能发现兽踪，还叫全家族的几十个男子都参加了军队，跟着我一同打仗出力。你们谁能比得上？”

大家听了，便谁也不吭声了。

注释：语出《史记·萧相国世家》、《汉书·萧何传》。最早见于

《韩非子·五蠹》：“弃私家之事，而必汗马之劳，家困而上弗论，则穷矣！”汗马：在征战中战马驰骋而出汗。

**用法：**“褒义。又作“汗马之劳”、“汗马之功”。古代用于形容军事方面的战功。古时候作战多用马。战马疾驰疆场，冲锋陷阵，每战都要出很多汗。战斗次数越多，战况越激烈，出汗当然也越多。为此，形容有战功，就用“汗马功劳”。现在也常用来形容指在各方面辛辛苦苦建立的功绩和做出的贡献。

**例句：**过去，他率军转战南北，现在又领我们开垦荒原，可以说为祖国、为人民立下了～。

**近义：**丰功伟绩 劳苦功高 提剑汗马

**反义：**碌碌无为 徒劳无功 毛发之功